ॐ

विज्ञान भैरव तंत्र

ध्यान की ११२ विधियाँ

सम्पूर्ण १६२ श्लोक · हिंदी व्याख्या · अभ्यास-विधि

◆ ◆ ◆

ज्योति यात्रा प्रकाशन

jyotiyatra.in

विज्ञान भैरव तंत्र

भगवान शिव और माता पार्वती का संवाद

ध्यान की ११२ विधियाँ · सम्पूर्ण १६२ श्लोक

jyotiyatra.in

ज्योति यात्रा

jyotiyatra.in

विज्ञान भैरव तंत्र — सम्पूर्ण

ध्यान की ११२ विधियाँ — मूल संस्कृत, शब्दार्थ, हिंदी अनुवाद, विस्तृत व्याख्या और अभ्यास-विधि

© २०२६ ज्योति यात्रा (Jyoti Yatra) · सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

मूल संस्कृत पाठ: संस्कृत विकिस्रोत (सार्वजनिक डोमेन)। शब्दार्थ, अनुवाद, व्याख्या, अभ्यास-विधियाँ: ज्योति यात्रा।

यह पुस्तक आध्यात्मिक और शैक्षिक प्रस्तुति है; किसी रोग के उपचार का विकल्प नहीं। अभ्यास से पहले ‘आवश्यक सावधानियाँ’ अवश्य पढ़ें।

प्रथम संस्करण: २०२६
प्रकाशक: ज्योति यात्रा प्रकाशन (CodePeacock) · jyotiyatra.in

अनुक्रमणिका

भूमिका ५

इस पुस्तक से अभ्यास कैसे करें ७

आवश्यक सावधानियाँ ९

प्रकरण १ — देवी के प्रश्न, भैरव का उत्तर (श्लोक १–२३) ११

प्रकरण २ — प्राण और श्वास (श्लोक २४–३१) ४८

प्रकरण ३ — शून्य, बिंदु और नाद (श्लोक ३२–४२) ६५

प्रकरण ४ — देह और जगत में आकाश (श्लोक ४३–५८) ८८

प्रकरण ५ — दृष्टि और मध्य (श्लोक ५९–६४) १२१

प्रकरण ६ — आनंद के द्वार (श्लोक ६५–७५) १३४

प्रकरण ७ — प्रकाश, अंधकार और आसन (श्लोक ७६–९२) १५७

प्रकरण ८ — मन, इच्छा और चेतना (श्लोक ९३–११०) १९२

प्रकरण ९ — जीवन के साधारण क्षण (श्लोक १११–१२९) २२९

प्रकरण १० — भैरव-भाव (श्लोक १३०–१३८) २६८

प्रकरण ११ — सच्चा जप, ध्यान और पूजा (श्लोक १३९–१६२) २८७

ध्यान-विधियों की विषय-सूची ३२६

शब्दकोश ३२७

मूल पाठ के विषय में ३३१

jyotiyatra.in

भूमिका

भारत की आध्यात्मिक परंपरा में ध्यान पर अनगिनत ग्रंथ लिखे गए, पर विज्ञान भैरव तंत्र जैसा अनोखा ग्रंथ दुर्लभ है। इसमें न लंबे दार्शनिक तर्क हैं, न कठिन कर्मकांड, न किसी एक मार्ग का आग्रह। इसमें है भगवान शिव और माता पार्वती का एक प्रेम-भरा संवाद, जिसमें देवी पूछती हैं — परम सत्य क्या है, और उस तक पहुँचें कैसे? — और शिव उत्तर में एक सौ बारह ध्यान-विधियाँ देते हैं।

इस ग्रंथ को परंपरा 'रुद्रयामल तंत्र' का सार मानती है, और इसका संबंध कश्मीर की उस महान शैव परंपरा से है जिसे 'त्रिक' या 'प्रत्यभिज्ञा' दर्शन कहा जाता है। आचार्य अभिनवगुप्त, क्षेमराज और उनके उत्तराधिकारी इस ग्रंथ को बहुत आदर से उद्धृत करते थे। आचार्य क्षेमराज और बाद में आचार्य शिवोपाध्याय ने इस पर टीकाएँ लिखीं। इस ग्रंथ की रचना का निश्चित काल ज्ञात नहीं, पर विद्वान इसे लगभग एक हज़ार वर्ष से भी अधिक प्राचीन मानते हैं।

इस ग्रंथ की सबसे बड़ी विशेषता इसकी व्यापकता है। यहाँ श्वास की विधियाँ हैं, ध्वनि और मंत्र की विधियाँ हैं, आकाश और शून्य की विधियाँ हैं, प्रकाश और अंधकार की, प्रेम और आनंद की, भक्ति और विवेक की विधियाँ हैं। कोई विधि आसन पर बैठकर करनी है, कोई चलते-फिरते, कोई छींक के क्षण में, कोई प्रियजन से मिलने के आनंद में। शिव मानो कहते हैं — हर स्वभाव के व्यक्ति के लिए, जीवन के हर क्षण में, एक द्वार खुला है।

इन सब विधियों के पीछे कुछ मूल सूत्र बार-बार आते हैं। पहला — 'मध्य': दो श्वासों, दो विचारों, दो भावों के बीच का वह क्षण जहाँ न यह है, न वह — वहीं शिव हैं। दूसरा — 'शून्य' और 'भरिता': विचारों से खाली होना, पर खालीपन का अर्थ सूनापन नहीं, पूर्णता है। तीसरा — 'शक्ति ही द्वार है': श्वास, ध्वनि, आनंद, भावना — जीवन की हर ऊर्जा शिव तक पहुँचने

का मुख है। और चौथा — 'एक में स्थिर होना पर्याप्त है': इन ११२ में से किसी एक विधि में भी जो पूरी तरह स्थिर हो जाए, वह भैरव-स्वरूप हो जाता है।

इस पुस्तक में हर श्लोक के साथ मूल संस्कृत, उसका रोमन लिप्यंतरण, कठिन शब्दों के अर्थ, सरल हिंदी अनुवाद और विस्तृत भावार्थ दिया गया है। ध्यान-विधि वाले हर श्लोक के साथ चरण-दर-चरण 'अभ्यास की विधि', आवश्यक 'सावधानी' और अभ्यास से होने वाले 'अनुभव' के संकेत भी दिए गए हैं। बाकी श्लोकों के साथ एक 'चिंतन' प्रश्न है। हमारा प्रयास रहा है कि यह पुस्तक केवल पढ़ी न जाए, जी जाए — और पूरा परिवार, युवा हो या बुज़ुर्ग, इसे सहजता से अपना सके।

jyotiyatra.in

इस पुस्तक से अभ्यास कैसे करें

◆

पहले पूरे ग्रंथ को एक बार धीरे-धीरे पढ़ें, जैसे कोई यात्री पूरे नक्शे को देखता है। हर विधि को करने की जल्दी न करें। पढ़ते-पढ़ते आप पाएँगे कि कुछ विधियाँ आपके मन को सहज रूप से छूती हैं, और कुछ कठिन या अपरिचित लगती हैं। जिन विधियों पर मन ठहरे, उन पर पेंसिल से निशान लगा लें।

फिर उनमें से केवल एक विधि चुनें। आरम्भ के लिए श्वास की पहली विधि (श्लोक २४), खुले आकाश को देखने की विधि (श्लोक ८४), हृदय-कमल का ध्यान (श्लोक ४९), या 'जहाँ मन प्रसन्न हो वहीं टिको' (श्लोक ७४) बहुत उपयुक्त हैं। उस एक विधि को कम से कम चालीस दिन, प्रतिदिन एक ही समय पर, १० से २० मिनट करें। सुबह सूर्योदय के आसपास या रात सोने से पहले का समय सबसे अच्छा रहता है।

ध्यान के लिए किसी विशेष वस्त्र, आसन या स्थान की आवश्यकता नहीं। एक शांत कोना, सीधी पर ढीली कमर, और फ़ोन से कुछ मिनट की दूरी — इतना पर्याप्त है। कुर्सी पर बैठकर भी ध्यान किया जा सकता है। भोजन के तुरंत बाद या बहुत थकान में ध्यान न करें।

हर दिन के अभ्यास के बाद दो पंक्तियों में अपना अनुभव लिख लेना बहुत लाभदायक है। कुछ दिन मन शांत रहेगा, कुछ दिन बहुत भटकेगा — दोनों स्वाभाविक हैं। शिव स्वयं कहते हैं (श्लोक ११६) कि मन जहाँ भी जाए, वहाँ भी शिव ही हैं। इसलिए भटकने पर झुँझलाएँ नहीं; कोमलता से लौट आएँ।

चालीस दिन बाद आप चाहें तो उसी विधि को जारी रखें, या कोई दूसरी विधि चुनें। धीरे-धीरे आप पाएँगे कि ये विधियाँ आसन से उठकर आपके दैनिक जीवन में उतरने लगती हैं —

भोजन में, संगीत में, किसी प्रियजन से मिलने में, यहाँ तक कि छींक के बाद के एक क्षण में भी। यही इस ग्रंथ का असली उद्देश्य है: पूरा जीवन ध्यान बन जाए।

jyotiyatra.in

आवश्यक सावधानियाँ

यह पुस्तक एक आध्यात्मिक और शैक्षिक प्रस्तुति है। इसमें दी गई ध्यान-विधियाँ सामान्य, स्वस्थ व्यक्तियों के लिए हैं, और इन्हें धीरे-धीरे, कोमलता से, अपनी क्षमता के अनुसार करना चाहिए। ये विधियाँ किसी भी शारीरिक या मानसिक रोग के उपचार का विकल्प नहीं हैं।

श्वास से जुड़ी विधियों में कभी भी ज़बरदस्ती साँस न रोकें। उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, अस्थमा, मिर्गी, गर्भावस्था, या हाल की किसी सर्जरी की स्थिति में श्वास रोकने (कुम्भक), तेज़ घूमने (श्लोक १११), मूलबंध (श्लोक ११४) या किसी भी शारीरिक रूप से कठिन विधि से पहले चिकित्सक से परामर्श लें।

कुछ विधियाँ — जैसे शरीर या संसार को अग्नि में विलीन होते देखना (श्लोक ५२-५३), या संसार को शून्य और स्वप्न जैसा देखना — गहरे मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाल सकती हैं। जो लोग अवसाद, चिंता-रोग, आघात (ट्रॉमा), आत्म-हानि के विचारों, या किसी गंभीर मानसिक रोग से गुज़र रहे हैं, वे ऐसी विधियाँ न करें, और अपने चिकित्सक या परामर्शदाता की सलाह से ही ध्यान आरम्भ करें। ऐसे लोगों के लिए श्वास, हृदय और आनंद की कोमल विधियाँ अधिक उपयुक्त हैं।

श्लोक ९३ में सुई से शरीर को भेदने की बात है; इस पुस्तक में उसका केवल सुरक्षित रूप (हल्की चुटकी या बर्फ का स्पर्श) दिया गया है। किसी भी विधि में शरीर को क्षति पहुँचाने वाला कोई कार्य न करें। सूर्य की ओर सीधे कभी न देखें। ऊँचाई या कुएँ वाली विधि (श्लोक ११५) केवल पूरी सुरक्षा के साथ, या केवल कल्पना से करें।

यदि ध्यान के दौरान लगातार सिरदर्द, घबराहट, अनिद्रा, भय, या कोई असामान्य और परेशान करने वाला अनुभव हो, तो अभ्यास रोक दें, सामान्य श्वास लें, और कुछ दिन केवल

हल्की श्वास-विधियाँ करें। आवश्यकता हो तो किसी अनुभवी शिक्षक या चिकित्सक से बात करें। ध्यान का उद्देश्य शांति है; यदि वह अशांति ला रहा है, तो रुककर मार्ग बदलना ही बुद्धिमानी है।

jyotiyatra.in

प्रकरण १

देवी के प्रश्न, भैरव का उत्तर

संवाद की भूमिका — परम सत्य क्या है?

◆ ◆ ◆

विज्ञान भैरव तंत्र एक संवाद से आरम्भ होता है। माता पार्वती, जो यहाँ भैरवी या देवी कहलाती हैं, भगवान शिव से वह प्रश्न पूछती हैं जो हर साधक के मन में कभी न कभी उठता है — शास्त्रों में इतने रूप, इतने मंत्र, इतनी विधियाँ बताई गई हैं; पर इन सबके पीछे परम सत्य वास्तव में क्या है? इस पहले प्रकरण में देवी के संशय, शिव का उत्तर और यह रहस्य आता है कि शिव और शक्ति दो नहीं हैं। यही भूमिका आगे की ११२ ध्यान-विधियों का आधार बनती है।

jyotiratra.in

श्लोक १

श्री देव्युवाच

श्रुतं देव मया सर्वं रुद्रयामलसम्भवम् ।
त्रिकभेदमशेषेण सारात्सारविभागशः ॥

śrutaṃ deva mayā sarvaṃ rudrayāmalasambhavam |
trikabhedamaśeṣeṇa sārātsāravibhāgaśaḥ ||

शब्दार्थ

श्रुतम् — सुना है
देव — हे देव
मया — मैंने
सर्वम् — सब कुछ
रुद्रयामलसम्भवम् — रुद्रयामल तंत्र से उत्पन्न
त्रिकभेदम् — त्रिक (शिव-शक्ति-नर) के भेद
अशेषेण — पूरी तरह
सारात्सारविभागशः — सार के भी सार के विभाग सहित

jyotiyatra.in

हिंदी अनुवाद

देवी ने कहा — हे देव! रुद्रयामल तंत्र से निकला हुआ सारा ज्ञान, त्रिक दर्शन के सभी भेद, सार से सार तक विभाग करके, मैंने पूरी तरह सुन लिया है।

भावार्थ एवं व्याख्या

ग्रंथ की पहली पंक्ति ही बता देती है कि यह संवाद किसी नौसिखिए का नहीं है। देवी कहती हैं कि उन्होंने रुद्रयामल तंत्र का सारा ज्ञान सुन लिया है — त्रिक दर्शन के सारे भेद, सार और उसका भी सार। त्रिक कश्मीर की वह शैव परंपरा है जो शिव, शक्ति और नर (जीव) — इन

तीनों के संबंध को समझाती है। विज्ञान भैरव को परंपरा रुद्रयामल तंत्र का ही एक अंश मानती है।

इसमें एक गहरी शिक्षा छिपी है। बहुत कुछ सुन लेना, पढ़ लेना, जान लेना — यह ज्ञान का पहला चरण है, अंतिम नहीं। देवी के पास जानकारी पूरी है, फिर भी कुछ अधूरा है। जैसे कोई व्यक्ति तैराकी की सारी पुस्तकें पढ़ ले, पर पानी में कभी उतरा ही न हो। जानकारी और अनुभव के बीच की यही दूरी इस पूरे ग्रंथ का विषय है।

इसलिए यह ग्रंथ हमें आदर से यह भी सिखाता है कि प्रश्न पूछना साधना का अंग है। देवी शिव की अर्धांगिनी हैं, फिर भी वे शिष्य बनकर पूछती हैं। जो साधक अपने संशय को छिपाता नहीं, ईमानदारी से सामने रखता है, उसी के लिए उत्तर का द्वार खुलता है।

चिंतन: मैंने अध्यात्म के बारे में जो कुछ पढ़ा-सुना है, उसमें से कितना मेरे अपने अनुभव में उतरा है?

jyotiyatra.in

अद्यापि न निवृत्तो मे संशयः परमेश्वर ।
किं रूपं तत्त्वतो देव शब्दराशिकलामयम् ॥

adyāpi na nivṛtto me saṃśayaḥ parameśvara |
kiṃ rūpaṃ tattvato deva śabdarāśikalāmayam ||

शब्दार्थ

अद्यापि — आज तक भी
न निवृत्तः — दूर नहीं हुआ
मे — मेरा
संशयः — संदेह
परमेश्वर — हे परमेश्वर
किम् — क्या
रूपम् — स्वरूप
तत्त्वतः — वास्तव में
शब्दराशिकलामयम् — अक्षरों के समूह और उनकी कलाओं से बना

jyotiyatra.in

हिंदी अनुवाद

हे परमेश्वर! फिर भी आज तक मेरा संदेह दूर नहीं हुआ। हे देव, वास्तव में आपका स्वरूप क्या है? क्या वह अक्षरों के समूह (शब्दराशि) और उनकी कलाओं से बना है?

भावार्थ एवं व्याख्या

यहाँ देवी अपना पहला संदेह खोलती हैं। तंत्र-शास्त्र में भैरव को अनेक रूपों में बताया गया है। एक मत कहता है कि भैरव शब्दराशि हैं — अर्थात संस्कृत वर्णमाला के सभी अक्षर, जिनसे सारे मंत्र और सारी सृष्टि बनी मानी जाती है। देवी पूछती हैं — क्या आपका असली रूप यही है?

यह प्रश्न केवल दार्शनिक नहीं है। जब हम किसी मंत्र का जप करते हैं, तो मन में यह भाव होता है कि ईश्वर उस शब्द में है। देवी पूछ रही हैं — क्या ईश्वर शब्द ही है, या शब्द केवल उस तक पहुँचने का साधन है? जैसे किसी का नाम पुकारने से वह व्यक्ति मुड़कर देखता है, पर वह नाम स्वयं वह व्यक्ति नहीं है।

इस श्लोक से हम सीखते हैं कि संदेह को दबाना नहीं, स्पष्ट करना है। 'अद्यापि' — आज तक भी — इस शब्द में एक ईमानदारी है। बहुत सुनने के बाद भी जब भीतर स्पष्टता न आए, तो उसे स्वीकार करना ही सच्ची जिज्ञासा का लक्षण है।

चिंतन: मैं जिस नाम या मंत्र का स्मरण करता हूँ, क्या मैं उसे ही ईश्वर मान बैठा हूँ, या उसके पार भी देखता हूँ?

श्लोक ३

किं वा नवात्मभेदेन भैरवे भैरवाकृतौ ।
त्रिशिरोभेदभिन्नं वा किं वा शक्तित्रयात्मकम् ॥

kiṃ vā navātmabhedena bhairave bhairavākṛtau |
triśirobhedabhinnaṃ vā kiṃ vā śaktitrayātmakam ||

शब्दार्थ

किं वा — या फिर
भैरवे — भैरव में
नवात्मभेदेन — नवात्म (नौ तत्त्वों वाले) भेद से
भैरवाकृतौ — भैरव के आकार में

त्रिशिरोभेदभिन्नम् — त्रिशिर (तीन सिरों वाले) भेद से भिन्न

शक्तित्रयात्मकम् — तीन शक्तियों से बना

हिंदी अनुवाद

या फिर भैरव के आकार में स्थित आपका स्वरूप नवात्म भेद वाला है? या त्रिशिर भैरव के भेद से भिन्न है? या फिर वह तीन शक्तियों से बना है?

भावार्थ एवं व्याख्या

देवी तंत्र-परंपरा के और भी मत गिनाती हैं। एक मत में भैरव 'नवात्म' हैं — नौ तत्त्वों वाला एक मंत्र-रूप। दूसरे मत में वे 'त्रिशिर' भैरव हैं — तीन सिरों वाले। तीसरे मत में भैरव तीन शक्तियों का रूप हैं — इच्छा, ज्ञान और क्रिया। ये सब उस समय की प्रसिद्ध साधना-पद्धतियों के नाम हैं।

सामान्य पाठक के लिए यह सूची कठिन लग सकती है, पर इसका भाव सरल है। हर संप्रदाय अपने ढंग से ईश्वर का रूप बताता है — कोई चार भुजाओं वाला, कोई तीन नेत्रों वाला, कोई निराकार। देवी पूछ रही हैं — इन अनेक वर्णनों में सच कौन-सा है? क्या कोई एक सही है और बाकी गलत?

jyotiyatra.in

हमारे घरों में भी यही प्रश्न उठता है जब कोई बच्चा पूछता है — भगवान दिखते कैसे हैं? इस ग्रंथ का उत्तर आगे आएगा, और वह चौंकाने वाला है। अभी के लिए इतना समझें कि देवी हर प्रचलित उत्तर को परख रही हैं, किसी को आँख मूँदकर स्वीकार नहीं कर रहीं।

चिंतन: ईश्वर के बारे में मेरी कल्पना कहाँ से आई है — अनुभव से, या केवल सुनी-सुनाई बातों से?

नादबिन्दुमयं वापि किं चन्द्रार्धनिरोधिकाः ।
चक्रारूढमनच्कं वा किं वा शक्तिस्वरूपकम् ॥

nādabindumayaṃ vāpi kiṃ candrārdhanirodhikāḥ |
cakrārūḍhamanackaṃ vā kiṃ vā śaktisvarūpakam ||

शब्दार्थ

नादबिन्दुमयम् — नाद और बिंदु से बना

चन्द्रार्धनिरोधिकाः — अर्धचंद्र और निरोधिका (मंत्र की सूक्ष्म अवस्थाएँ)

चक्रारूढम् — चक्रों पर आरूढ़

अनच्कम् — स्वर-रहित (अ-अच्) ध्वनि

शक्तिस्वरूपकम् — शक्ति का स्वरूप

हिंदी अनुवाद

या फिर आपका स्वरूप नाद और बिंदु से बना है? या अर्धचंद्र और निरोधिका जैसी मंत्र की सूक्ष्म अवस्थाएँ हैं? या चक्रों पर आरूढ़ स्वर-रहित ध्वनि है? या फिर स्वयं शक्ति का स्वरूप है?

jyotiyatra.in

भावार्थ एवं व्याख्या

अब देवी मंत्र-साधना की सूक्ष्म अवस्थाओं की बात करती हैं। ‘ॐ’ जैसे मंत्र के उच्चारण में ध्वनि धीरे-धीरे सूक्ष्म होती जाती है — पहले अक्षर, फिर बिंदु (अनुस्वार), फिर अर्धचंद्र, फिर निरोधिका, फिर नाद — और अंत में मौन। तंत्र में इन्हें मंत्र की कलाएँ कहा गया है। कुछ साधक मानते थे कि भैरव इन्हीं सूक्ष्म ध्वनियों में हैं।

इसी तरह 'चक्रारूढ़' — चक्रों पर चढ़ा हुआ — वह मत है जिसमें साधक कुंडलिनी को एक-एक चक्र से ऊपर ले जाता है। 'अनच्क' वह ध्वनि है जिसमें स्वर नहीं, केवल गूँज है। देवी पूछती हैं — क्या आप इन्हीं अनुभवों में हैं?

यह प्रश्न आज भी प्रासंगिक है। ध्यान करने वाले कई लोग भीतर प्रकाश देखते हैं, ध्वनि सुनते हैं, शरीर में ऊर्जा का कंपन अनुभव करते हैं — और मान लेते हैं कि यही ईश्वर है। देवी का प्रश्न हमें सावधान करता है: अनुभव सुंदर हो सकते हैं, पर क्या वे अंतिम सत्य हैं?

चिंतन: क्या मैं साधना में किसी विशेष अनुभव (प्रकाश, ध्वनि, कंपन) को ही लक्ष्य मान बैठा हूँ?

श्लोक ५

परापरायाः सकलमपरायाश्च वा पुनः ।
पराया यदि तद्वत्स्यात्परत्वं तद्विरुध्यते ॥

parāparāyāḥ sakalamaparāyāśca vā punaḥ |
parāyā yadi tadvatsyātparatvaṃ tadvirudhyate ||

शब्दार्थ

परापरायाः — परा-अपरा (मिश्र) शक्ति का
अपरायाः — अपरा (निम्न) शक्ति का
तद्वत् — उसी प्रकार (साकार)
विरुध्यते — विरोध होता है
सकलम् — कलाओं सहित, साकार
परायाः — परा (सर्वोच्च) शक्ति का
परत्वम् — सर्वोच्चता

हिंदी अनुवाद

या फिर साकार रूप परा-अपरा शक्ति का है, या अपरा शक्ति का? यदि परा शक्ति का भी वैसा ही साकार रूप हो, तो उसकी सर्वोच्चता (परत्व) से विरोध होता है।

भावार्थ एवं व्याख्या

यहाँ देवी एक तार्किक कठिनाई सामने रखती हैं। तंत्र में शक्ति के तीन स्तर बताए गए हैं — परा (सर्वोच्च), परापरा (बीच की) और अपरा (स्थूल)। साकार रूप, जिसमें अंग, आकार, गुण हों, नीचे के स्तरों पर तो समझ में आता है। पर यदि सर्वोच्च शक्ति भी आकार वाली हो, तो वह सर्वोच्च कैसे रहेगी?

इसे एक उदाहरण से समझें। आकाश हर वस्तु को स्थान देता है — घड़े को भी, घर को भी, पहाड़ को भी। पर यदि आकाश स्वयं किसी घड़े के आकार का हो जाए, तो वह सबको कैसे समाएगा? जो सबका आधार है, वह किसी एक आकार में बँधकर सीमित हो जाएगा। यही देवी का तर्क है।

यह श्लोक दिखाता है कि भक्ति और तर्क विरोधी नहीं हैं। देवी पूरी श्रद्धा से पूछ रही हैं, पर बुद्धि को बंद करके नहीं। भारतीय परंपरा में यही संतुलन आदर्श माना गया है — हृदय में श्रद्धा, बुद्धि में स्पष्टता।

jyotiyatra.in

चिंतन: क्या मेरी श्रद्धा प्रश्न पूछने से डरती है, या प्रश्नों से और गहरी होती है?

न हि वर्णविभेदेन देहभेदेन वा भवेत् ।
परत्वं निष्कलत्वेन सकलत्वे न तद्भवेत् ॥

na hi varṇavibhedena dehabhedena vā bhavet |
paratvaṃ niṣkalatvena sakalatve na tadbhavet ||

शब्दार्थ

न हि — निश्चय ही नहीं

वर्णविभेदेन — वर्णों (अक्षरों/रंगों) के भेद से

देहभेदेन — शरीर के भेद से

भवेत् — हो सकता

परत्वम् — परम-भाव

निष्कलत्वेन — निष्कल (कला-रहित, निराकार) होने से

सकलत्वे — सकल (साकार) होने पर

हिंदी अनुवाद

परम-भाव वर्णों के भेद से या शरीर के भेद से नहीं हो सकता। परमत्व तो निष्कल (निराकार) होने में है; साकार होने पर वह नहीं रहता।

भावार्थ एवं व्याख्या

देवी अपना तर्क पूरा करती हैं — जो परम है, वह न अक्षरों के भेद में बँट सकता है, न शरीरों के भेद में। जो अलग-अलग रूपों में बँटा है, वह सीमित है; और जो सीमित है, वह परम नहीं हो सकता। इसलिए परम तत्त्व 'निष्कल' होना चाहिए — बिना अंशों का, बिना आकार का, अखंड।

jyotiyatra.in

पर तब एक नया प्रश्न उठता है: यदि ईश्वर निराकार है, तो साधक ध्यान किस पर करे? मूर्ति, मंत्र, चक्र — सब तो आकार वाले हैं। क्या सारी साधनाएँ व्यर्थ हैं? देवी का संशय यहीं अपने चरम पर पहुँचता है, और यहीं से शिव के उत्तर की भूमिका बनती है।

हमारे जीवन में भी यही उलझन आती है। मन कहता है — जो दिखता नहीं, उससे जुड़ूँ कैसे? यह ग्रंथ इस उलझन का बहुत सुंदर उत्तर देगा: आकार द्वार हैं, मंज़िल नहीं। आगे की ११२ विधियाँ ठीक ऐसे ही द्वार हैं, जो साकार अनुभवों से निराकार में ले जाते हैं।

चिंतन: यदि ईश्वर निराकार है, तो मेरी पूजा और प्रार्थना का क्या अर्थ है — क्या वे द्वार हैं या मंज़िल?

श्लोक ७

श्री देव्युवाच

प्रसादं कुरु मे नाथ निःशेषं छिन्द्धि संशयम्।
(भैरव उवाच)
साधु साधु त्वया पृष्टं तन्त्रसारमिदं प्रिये॥

prasādaṃ kuru me nātha niḥśeṣaṃ chinddhi saṃśayam |
(bhairava uvāca)
sādhu sādhu tvayā pṛṣṭaṃ tantrasāramidaṃ priye ||

शब्दार्थ

प्रसादं कुरु — कृपा कीजिए
निःशेषम् — पूरी तरह
संशयम् — संदेह को
पृष्टम् — पूछा
प्रिये — हे प्रिये
नाथ — हे स्वामी
छिन्द्धि — काट दीजिए
साधु साधु — बहुत अच्छा, बहुत अच्छा
तन्त्रसारम् — तंत्र का सार

हिंदी अनुवाद

(देवी) हे नाथ, कृपा कीजिए और मेरे संदेह को पूरी तरह काट दीजिए। (भैरव ने कहा) — साधु, साधु! हे प्रिये, तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है; यह तो तंत्र का सार है।

भावार्थ एवं व्याख्या

इस श्लोक में संवाद मुड़ता है। देवी विनती करती हैं — 'छिन्द्धि संशयम्', मेरे संदेह को जड़ से काट दीजिए। संदेह को काटने की उपमा सुंदर है: जैसे उलझी हुई गाँठ को सुलझाते-सुलझाते थक जाएँ, तो एक झटके में काट देना ही उपाय है। देवी तर्क से थक चुकी हैं; अब वे अनुभव का उत्तर चाहती हैं।

शिव का पहला उत्तर कोई सिद्धांत नहीं, प्रशंसा है — 'साधु, साधु!' शिव प्रसन्न हैं कि प्रश्न सही जगह पर पहुँचा है। वे कहते हैं, यही तंत्र का सार है। अर्थात सारी साधनाओं, मंत्रों, रूपों के बाद जो प्रश्न बचता है — 'परम सत्य वास्तव में क्या है?' — वही सबसे मूल्यवान प्रश्न है।

एक अच्छे गुरु की यही पहचान है: वह शिष्य के प्रश्न को छोटा नहीं समझता। आज के माता-पिता और शिक्षक भी इससे सीख सकते हैं। जब बच्चा कोई गहरा प्रश्न पूछे, तो उसे टालने के बजाय कहें — 'बहुत अच्छा प्रश्न है!' इससे जिज्ञासा जीवित रहती है।

चिंतन: जब कोई मुझसे गहरा प्रश्न पूछता है, तो मैं उसे प्रोत्साहित करता हूँ या टाल देता हूँ?

ॐ

यह नमूना यहीं समाप्त होता है

पूरी पुस्तक में — सभी १६२ श्लोक, ध्यान की ११२ विधियाँ, हर विधि का चरण-दर-चरण अभ्यास, सावधानियाँ, विषय-सूची और शब्दकोश — ३४२ पृष्ठ।

पूरी ई-पुस्तक आपके नाम के साथ: **jyotiyatra.in/books/vigyan-bhairav/**

॥ ॐ नमः शिवाय ॥